

डॉ. काइल डनहम, नीतिवचन की संरचना और धर्मशास्त्र, सत्र 1

© 2024 काइल डनहम और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. काइल डनहम नीतिवचन की संरचना और धर्मशास्त्र, सत्र 1, चरित्र निर्माण के रूप में प्राथमिक बुद्धि पर अपने शिक्षण में हैं।

नमस्ते, मेरा नाम काइल डनहम है और आज मैं नीतिवचन के बारे में पढ़ाने जा रहा हूँ। मैं अपने बारे में एक संक्षिप्त परिचय देकर शुरुआत करना चाहता था। मैं डेट्रॉइट बैपटिस्ट थियोलॉजिकल सेमिनरी में पढ़ाता हूँ।

मैं ओल्ड टेस्टामेंट का एसोसिएट प्रोफेसर हूँ और मेरी पृष्ठभूमि मुख्य रूप से ज्ञान साहित्य में है। मेरा शोध प्रबंध अध्ययन अय्यूब की पुस्तक में था। मैंने कहावतों में कुछ काम किया है।

मैं वर्तमान में एक्लेसिएस्टेस पर एक टिप्पणी लिख रहा हूँ और इसलिए बाइबिल ज्ञान साहित्य वह जगह है जहां मैंने सबसे अधिक ध्यान केंद्रित किया है और इसलिए मैं इस अवसर के लिए आभारी हूँ। नीतिवचन की पुस्तक में आज हम जो देख रहे हैं उसका आधार एक जर्नल लेख है जो हाल ही में प्रकाशित हुआ है जिसे मैंने बाइबिल अनुसंधान के लिए बुलेटिन में लिखा था और इसे नीतिवचन में संरचना और धर्मशास्त्र कहा जाता है, नौसिखिया नेताओं के लिए एक शैक्षिक कार्यक्रम के रूप में इसका कार्य प्राचीन इसराइल। मेरा तर्क, जैसा कि हम इसके माध्यम से काम करते समय दिखाएंगे, यह है कि नीतिवचन एक प्राचीन पाठ्यक्रम था जिसे अनुभवहीन युवाओं को परिपक्वता और जटिलता के उच्च स्तर की ओर बढ़ने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किया गया था क्योंकि वे प्राचीन इज़राइल में सामाजिक-राजनीतिक नेतृत्व की आकांक्षा रखते थे।

और इसलिए, हम उस पर एक साथ काम करेंगे और यही हमारे अध्ययन का आधार होगा। तो, चलिए शुरू करते हैं। मैंने इसका शीर्षक रखा है, जैसा कि मैंने कहा, नीतिवचन में संरचना और धर्मशास्त्र और हम यह देखने जा रहे हैं कि नीतिवचन की पुस्तक प्राचीन इज़राइल के संदर्भ में युवाओं को मुख्य रूप से सामाजिक-राजनीतिक नेतृत्व के लिए प्रशिक्षित करने के लिए कैसे काम करती थी।

नीतिवचन की पुस्तक के बारे में अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों में से एक यह है कि नीतिवचन को जानबूझकर डिज़ाइन के साथ या पैटर्न को ध्यान में रखकर रखा गया है या नहीं। वास्तव में, एक कहावत है जो कई वर्षों से प्रसारित हो रही है कि बाइबिल के ज्ञान और विशेष रूप से नीतिवचन को बाइबिल के घराने में अनाथ के रूप में जाना जाता है। उस वाक्यांश का अर्थ अनिवार्य रूप से यह है कि नीतिवचन को एक ऐसी पुस्तक के रूप में देखा जाता था जिसमें वास्तव में धार्मिक सूत्रीकरण के संदर्भ में बहुत कुछ नहीं था।

कहने का तात्पर्य यह है कि पुस्तक में व्यावहारिक अभिविन्यास था, लेकिन वास्तव में यह धार्मिक नहीं था। और हाल ही में, यह अधिक जांच के दायरे में आ गया है क्योंकि अधिक से अधिक

विद्वानों ने यह देखने के लिए पुस्तक में भाग लिया है कि वास्तव में, इसमें धर्मग्रंथ के हमारे धार्मिक सहसंबंध में योगदान करने के लिए कुछ है। और मुझे यकीन है कि ऐसा होता है।

और इसलिए यह आज हमारे अध्ययन का आधार होगा। एक उल्लेखनीय विद्वान माइकल फॉक्स हैं और उन्होंने एक मोनोग्राफ की समीक्षा लिखी जिसमें यह विचार किया गया कि नीतिवचन में वास्तव में पुस्तक के भीतर कुछ डिज़ाइन पैटर्न थे। और माइकल फॉक्स ने तर्क दिया कि ऐसा नहीं था।

वास्तव में, माइकल फॉक्स ने यही कहा है। पिछले 20 वर्षों में, नीतिवचन में इसके दोनों हिस्सों और संपूर्ण रूप में डिज़ाइन और पैटर्न खोजने के प्रयास तेजी से हुए हैं। एक विद्वान उन विशेषताओं का पता लगाता है जो कनेक्ट होने पर उसे एक पैटर्न बनाती प्रतीत होती हैं।

कुछ लोग पूरे संग्रह को इकाइयों में विभाजित करना चाहते हैं, लेकिन यह पूरी तरह से एक विद्वान-उन्मुख दृष्टिकोण है। यह छिपे हुए पैटर्न को दिखाने का दावा करता है कि कार्य को समर्पित करने के लिए कुशल और सुसज्जित विश्लेषक उलझन के नीचे उजागर कर सकते हैं। बिखरे हुए विषयगत समूहों और नीतिवचन स्ट्रिंग्स और एक सामयिक कविता के बाहर, व्याख्या में बाधा डालने जैसा कोई महत्वपूर्ण पैटर्न व्यापक रूप से नहीं देखा गया है।

उन्हें ढूँढ़ने का उद्यम तभी तक मूल्यवान है जब तक यह स्वयं को निरर्थक साबित कर चुका है। अब, माइकल फॉक्स की स्थिति स्पष्ट रूप से यह है कि नीतिवचन को किसी जानबूझकर डिज़ाइन पैटर्न को ध्यान में रखकर नहीं रखा गया था। कहने का तात्पर्य यह है कि नीतिवचनों की एक शिथिल रूप से जुड़ी हुई श्रृंखला थी और विशेष रूप से अध्याय 10 के बाद की सामग्री को देखते हुए, कि वास्तव में उन नीतिवचनों के लिए कोई इरादा या सचेत व्यवस्था नहीं है।

हालाँकि, दूसरों ने सुझाव दिया है कि शायद पुस्तक में अधिक सचेत, जानबूझकर पैटर्न है। वास्तव में, कई लोगों ने प्राचीन इज़राइल जैसी प्राथमिक मौखिक संस्कृतियों के संदर्भों का अध्ययन किया है और सुझाव दिया है कि उन संस्कृतियों में पाठ बनाने की प्रेरणा में, एक महत्वपूर्ण तत्व जानबूझकर मौखिक पैटर्निंग था। कहने का तात्पर्य यह है कि वह भाषा जो फार्मूलाबद्ध और दोहराव, लयबद्ध और मौखिक अभिव्यक्ति थी, इन सभी का एक कार्य था जिसे वाल्टर ओंग ने स्मरक सेवाक्षमता कहा है।

इससे हमारा तात्पर्य यह है कि ये पाठ सामग्री को याद रखने और उस पर महारत हासिल करने में सहायता करते हैं जो महत्वाकांक्षी नेताओं, शास्त्रियों, समाज के नेताओं और समाज के उन अभिजात वर्ग के दिमाग और विश्वदृष्टिकोण का निर्माण करेगा जो उस संस्कृति का नेतृत्व करेंगे। डेविड कैर ने इन पंक्तियों के साथ व्यापक काम किया है और उन्होंने सुझाव दिया है कि ऐसे कई लोग थे जिन्हें वे लिखित मीडिया कहते हैं जो लोगों के दिमाग में शब्द दर शब्द प्रमुख सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं को उकसाने की एक सांस्कृतिक परियोजना का हिस्सा थे। और तर्क यह है कि नेताओं के निर्माण में, यह ग्रंथों के मुख्य पाठ्यक्रम की महारत और याद रखने के माध्यम से किया और विकसित किया गया था।

और मैं यह तर्क देना चाहता हूँ कि नीतिवचन का कार्य संभवतः इस प्रकार का होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि पुस्तक को जानबूझकर इस तरह से व्यवस्थित किया गया था कि उसे याद रखने में सहायता मिले। और मुझे लगता है कि इसे देखने का सुराग यह तथ्य है कि जब पुस्तक की संरचना की जाती है, तो सामग्रियों के बीच की सीमें, जैसा कि हम आज देखेंगे, इस तरह से व्यवस्थित की जाती हैं कि सीखने वाले को कुछ गुणों की ओर आगे बढ़ाया जा सके।

अर्थात् धार्मिकता, न्याय और सत्यनिष्ठा जैसे गुणों को विकसित करना। और यह हम तब देखते हैं जब हम पुस्तक के अनुभागों और वहां मौजूद ज्ञान सामग्री के संग्रह का अध्ययन करते हैं। तो, आज मेरी थीसिस या मेरा उद्देश्य यह दिखाना है कि नीतिवचन की साहित्यिक संरचना एक शैक्षिक कार्यक्रम को आगे बढ़ाती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि इसे प्रस्तावना में रेखांकित किया गया है और सात ज्ञान संग्रहों के साहित्यिक क्षेत्रों में विकसित किया गया है। मैं सुझाव देना चाहता हूँ कि नीतिवचन में ज्ञान के सात खंडों का एक जानबूझकर समूह है और यह कार्यक्रम तब विकसित किया गया था जब युवा नेता ने सामग्री में महारत हासिल की और एक अनुभवहीन युवा व्यक्ति को धार्मिकता, न्याय और अखंडता के इन गुणों की ओर प्रेरित किया। और इसलिए आज जब हम नीतिवचन की पुस्तक को देखेंगे तो यही हमारा लक्ष्य होगा।

मैं सुझाव देना चाहता हूँ कि जैसे-जैसे युवा लोगों ने नीतिवचन की सामग्री में महारत हासिल की, वे मौलिक नैतिक निर्णयों से लेकर जटिल सामाजिक अनुप्रयोगों तक विकास की प्रगति पर एक निरंतरता में चले गए। आप नीतिवचन की पुस्तक में प्रक्षेपवक्र की कई अलग-अलग रेखाओं में गति देख सकते हैं। एक है पारिवारिक परिवेश से लेकर सामाजिक नेतृत्व का क्षेत्र।

एक घरेलू परिवेश से लेकर विदेशी शाही सेवा तक का है। मुझे लगता है कि नीतिवचन की पुस्तक इसे पूरा करती है या युवा व्यक्ति को टोरा के धार्मिक मानदंडों की अधिक समझ की ओर ले जाकर इसे प्राप्त करती है। कहने का तात्पर्य यह है कि, नीतिवचन की पुस्तक उन धार्मिक मानदंडों को इस तरह से ठोस या भौतिक बनाती है कि उन सच्चाइयों को इस सामग्री की स्मृति और महारत के माध्यम से स्थापित किया जाता है।

जिसे मैं स्मरणीय संकेत कहता हूँ, वह सात ज्ञान संग्रहों की परतों में अंतर्निहित है। और इसलिए उभरते हुए नेता टोरा को एक बुद्धिमान शाही अधिकारी के रूप में प्रस्तुत करने के लिए इस सामग्री में महारत हासिल करते हैं। और इसलिए, मुझे लगता है कि किताब तक पहुंचने का यह सबसे अच्छा तरीका है।

वहां पहुंचने से पहले पृष्ठभूमि के बारे में कुछ बातें। मैं कुछ विद्वानों के बारे में बात करना चाहता हूँ जिन्होंने पुस्तक के प्रति इस तरह का दृष्टिकोण बनाया है और इसी तर्ज पर अपनी सोच बनाई है। एक है ब्रेवार्ड चिल्ड्स.

ब्रेवार्ड चिल्ड्स विहित दृष्टिकोण के अग्रणी हैं और उन्होंने विहित दृष्टिकोण को कैसे परिभाषित किया, वे कहते हैं, इसके लिए दुभाषिया को बाइबिल के पाठ को उसके प्राप्त रूप में बारीकी से देखने की आवश्यकता होती है और फिर आस्था के समुदाय के लिए इसके कार्य को गंभीर रूप

से समझना होता है। और इससे उनका तात्पर्य यह था कि किसी पुस्तक के पीछे छिपी सभी आलोचनात्मक परतों का पता लगाने की कोशिश करने के बजाय, हमारे अध्ययन का उद्देश्य पुस्तक का अंतिम रूप होना चाहिए क्योंकि यह विश्वास और समुदाय के माध्यम से प्रसारित किया गया है। आस्था के समुदाय में इसके कार्य का पता लगाएं। कहने का तात्पर्य यह है कि यह पुस्तक आस्था के समुदाय में कैनन के रूप में क्या हासिल कर रही है, क्या कर रही है या हासिल कर रही है? और इसलिए, उनके दृष्टिकोण ने वास्तव में ग्रंथों के अंतिम रूप को देखने की दिशा में बाइबिल की विद्वता में बहुत सारे प्रक्षेप पथ बदल दिए।

उनके पास एक छात्र था जो काफी प्रसिद्ध था जिसने इस दृष्टिकोण को अपनाया और इसे भजन की पुस्तक में लागू किया। जेराल्ड विल्सन ने इसे स्तोत्र पर लागू किया। गेराल्ड विल्सन ने जो हासिल किया वह था चिल्ड्स के विचार को लेना और फिर उसे किसी दी गई पुस्तक के संदर्भ में मूर्त रूप देना।

गेराल्ड विल्सन ने तर्क दिया कि स्तोत्र को देखते हुए, पुस्तक के आकार को समझने का सबसे अच्छा तरीका उन सीमों को करीब से देखना है जो स्तोत्र की पांच पुस्तकों को जोड़ते हैं। यह प्रत्येक पुस्तक का प्रारंभिक और समापन भजन, परिचय और निष्कर्ष है, और इस प्रकार अंतिम संपादक या व्यवस्थाकर्ता के इरादे और साहित्यिक रणनीति को समझना है जो उन्होंने पुस्तक को एक साथ रखने में की थी। तो उन दोनों ने बाइबिल विद्वता के विशेष पहलुओं को प्रभावित किया है।

संभवतः इसका एक हालिया परिशोधन जूलियस स्टाइनबर्ग है। उन्होंने कुछ साल पहले एक किताब लिखी थी जिसमें वह संरचनात्मक विहित दृष्टिकोण, संरचनात्मक विहित दृष्टिकोण के बारे में बात करते हैं। और स्टीनबर्ग चिल्ड्स पद्धति में संरचनात्मक जोड़कर जो करते हैं वह यह सुझाव देते हैं कि हमें पुस्तकों की साहित्यिक संरचना और डिजाइन पैटर्न को देखना चाहिए।

कहने का तात्पर्य यह है कि, हम न केवल अंतिम रूप को देखते हैं, बल्कि साहित्यिक संरचना स्वयं उस पुस्तक को कैसे सूचित करती है और यह आस्था के समुदाय के भीतर उसके कार्य को कैसे सूचित करती है। अब नीतिवचन की पुस्तक में, मैं सुझाव देना चाहता हूँ कि इस संरचनात्मक विहित पाठन का संकेत दिया गया है और कुछ तिमाहियों में प्रारंभिक रूप से किया जाना शुरू हो गया है, लेकिन अभी भी बहुत काम करना बाकी है। और इसलिए, मेरा आज का प्रयास पुस्तक को संरचनात्मक विहित आधार पर पढ़ने का एक संभावित तरीका देने का एक प्रयास है।

कहने का तात्पर्य यह है कि, नीतिवचनों की साहित्यिक संरचना को देखें और देखें, क्या साहित्यिक संरचना हमारी समझ को सूचित करती है कि अंतिम संपादक ने एक विशिष्ट लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए नीतिवचनों के इन भागों को कैसे व्यवस्थित किया। यानि कि क्या पूरी किताब के पीछे कोई संपादकीय रणनीति है? मैं सुझाव देना चाहता हूँ कि वहाँ है। और वास्तव में, वहाँ, जैसा कि हम पुस्तक को देखते हैं, सात ज्ञान संग्रह हैं। आपको याद होगा कि प्रस्तावना के अंत में लेडी विजडम अपने घर का वर्णन करते हुए ज्ञान के सात स्तंभों के बारे में बात करती है।

और पुस्तक का मूल्यांकन करते समय, मुझे लगता है कि मैं इस बात से सहमत हूँ कि इसकी व्यवस्था को समझने का सबसे अच्छा तरीका सात संग्रहों की इन पंक्तियों के साथ है। कहने का तात्पर्य यह है कि, हम एक प्रस्तावना और एक प्रस्तावना से शुरू करते हैं, और फिर हम उस पर जाते हैं जिसे आमतौर पर साहित्य में सोलोमन 1 कहा जाता है। सोलोमन 1 इन सूक्तियों का एक संग्रह है, ये कहावतें जो अध्याय 10 से शुरू होती हैं और अध्याय 22 तक चलती हैं। और फिर हम दो छोटे खंडों में स्थानांतरित होते हैं जिन्हें बुद्धिमानों की बातें, बुद्धिमानों की बातें 1, और बुद्धिमानों की बातें 2 कहा जाता है। और फिर अंत में, 25.1 हमें एक नया शीर्षक देता है, जो कहता है, ये नीतिवचन हैं सुलैमान की नकल हिजकिय्याह के लोगों ने की।

इससे पता चलता है कि पुस्तक के संपादन और पुस्तक की व्यवस्था के इस चरण में हिजकिय्याह के शास्त्री काम पर थे। तो, इसे आमतौर पर सोलोमन 2 कहा जाता है। यह हमें अध्याय 29 में ले जाता है। और फिर हमारे पास अंतिम दो अध्याय हैं, जो रहस्यमय ज्ञान से भरे हुए हैं और थोड़े अधिक कठिन हैं।

मुझे विश्वास है कि आगुर और लेमुएल नाम के ये दो विद्वान हैं। और इसलिए, अध्याय 30 और 31 हमें ये व्यवस्थाएँ देते हैं। तो, सब कुछ एक साथ रखने पर, यह पता चलता है कि सात ज्ञान संग्रह हैं और ये सात संग्रह पाठक को अनुभवहीनता से अधिक परिपक्वता, जटिलता और ज्ञान के अनुप्रयोग की ओर ले जाते हैं।

इससे आगे बढ़ते हुए, जब मैं यह अध्ययन कर रहा था तो मैं विशेष रूप से जिस पर ध्यान केंद्रित करना चाहता था वह मूल विचार था जो मेरे मन में था, क्या होगा अगर हम जेराल्ड विल्सन ने स्तोत्र के लिए जो दृष्टिकोण अपनाया और कहा, तो क्या होगा, यदि पांच पुस्तकों को इस तरह से व्यवस्थित किया जाए जिस तरह आरंभिक और समापन भजन उन खंडों के बारे में हमारे पढ़ने को सूचित करते हैं, क्या हम नीतिवचन के अंत के बारे में भी यही बात कह सकते हैं? कहने का तात्पर्य यह है कि, यदि यह वास्तव में ज्ञान के सात संग्रह हैं, तो क्या उन सीमों के खुलने और बंद होने वाले खंडों में विशिष्ट सुराग हैं जो हमारे पढ़ने को सूचित कर सकते हैं? और इसलिए, जैसे ही मैंने उनका अध्ययन किया, मैंने सबसे पहले उन्हें उनके अलग-अलग हिस्सों में व्यवस्थित करना शुरू किया। और इसलिए, जब आप ज्ञान के सात संग्रहों को देखते हैं, तो हम उसमें आगे बढ़ सकते हैं और देख सकते हैं कि वहाँ एक तालिका है जो उनमें से कुछ को दर्शाती है। और इसलिए, यह ज्ञान के बारे में बात करने से शुरू होता है, प्रस्तावना ऐसा करती है, और यह लेडी विजडम और फ़ॉली के प्रतिद्वंद्वी निमंत्रण के साथ समाप्त होती है।

तो, प्रस्तावना में, बुद्धि की तुलना मूर्खता से की जा रही है और यह विशेष रूप से इन दो महिलाओं, इन दो महिलाओं, लेडी विजडम और लेडी फ़ॉली में सन्निहित है। फिर जब हम सुलैमान 1 पर पहुँचेंगे, जैसे-जैसे हम इस पर काम करेंगे, हम इसे और अधिक विस्तार से देखेंगे। अध्याय 10 में ज्ञान और मूर्खता का परिचय है, और फिर अध्याय 22 में धन और नैतिकता पर निष्कर्ष है।

बुद्धिमानों की बातों का अपना संक्रमण और परिचय होता है। इसमें एक उपदेश, प्रेरणा और उद्देश्य है। और यह बुद्धिमान अनुभाग की पहली बातों को ज्ञान, धार्मिकता और न्याय पर एक भाग के साथ समाप्त करता है।

और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे मैं यह तर्क देने जा रहा हूँ कि ये गुण, जो नीतिवचन की प्रस्तावना में पाए जाते हैं, वास्तव में पुस्तक का केंद्र बिंदु हैं। और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे हम इसे एक मिनट में देखेंगे। वाइज़ की बातें भी न्याय पर केंद्रित हैं और यह आलसी की एक उदाहरण कहानी के साथ समाप्त होती है।

तो फिर, यह परिश्रम और सदाचार के इस विचार को विकसित करता है। सोलोमन 2 जटिल शाही अनुप्रयोगों की ओर बढ़ता है। कहने का तात्पर्य यह है कि यह शाही दरबार पर केंद्रित है।

और इसलिए, हम 25 में शाही दरबार की व्यवस्था का परिचय देखते हैं। और यह अनुशासन, यहोवा में विश्वास और धार्मिकता पर जोर देने के साथ समाप्त होता है। फिर, धार्मिकता पुस्तक के प्रमुख तीन गुणों में से एक है, धार्मिकता, न्याय और सत्यनिष्ठा।

और फिर हमारे पास ऋषियों, अगुर और लेमुएल के साथ पुस्तक का एक दिलचस्प निष्कर्ष है। विशेष रूप से अगुर ने मुझे वर्षों से आकर्षित किया है। वह उससे आरंभ करता है जिसे मैं उचित ज्ञान ज्ञानमीमांसा में विनम्रता और सत्यनिष्ठा का परिचय कहता हूँ।

कहने का तात्पर्य यह है कि, वह समझता है कि ज्ञान का उद्यम केवल परिश्रम और कड़ी मेहनत से कहीं अधिक है, इसमें रहस्य और रहस्य भी हैं। पहेलियां हैं। ऐसी चीजें हैं जो उसकी समझ से परे हैं।

और इसलिए, वह ज्ञान के प्रति विनम्र दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है। और उनका निष्कर्ष भी इसी तर्ज पर है। उन्होंने ज्ञान की खोज में अहंकार बनाम विनम्रता पर निष्कर्ष निकाला और ज्ञान चाहने वाले को ब्रह्मांड में अपना स्थान याद रखने की सलाह दी।

कहने का तात्पर्य यह है कि प्रभु के समक्ष विनम्र बने रहना याद रखें। और फिर लेमुएल राजा है। इसलिए, अगुर और लेमुएल में, मैं यह तर्क देने जा रहा हूँ कि हमारे पास एक उल्लेखनीय ऋषि और एक उल्लेखनीय राजा हैं।

जब लेमुएल खत्म होता है, तो किताब पूरी तरह घूम जाती है। किताब की शुरुआत पिता और माँ के निर्देश से हुई। और किताब के अंत तक, बेटा अब राजा है और माँ निर्देश दे रही है।

और उसकी आवाज़ कई तरह से गूँजती है, वह आवाज़ जो प्रस्तावना में माँ में निहित है। और वह हताश हो गई है और कुछ पंक्तियों में उसे डांट रही है। और फिर किताब उस महिला की उच्च धर्मपरायणता पर एक निष्कर्ष के साथ समाप्त होती है जो यहोवा से डरती है।

जैसा कि मैं सुझाव दूंगा, मुझे लगता है कि लेमुएल ने जिस गुणी पत्नी को चुना है, वह अध्याय एक से नौ तक की प्रस्तावना में लेडी विजडम और उसके चरित्र का प्रतीक है। तो, यह पुस्तक का एक

बुनियादी अवलोकन है। और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, हम कुछ विवरणों को थोड़ा और अधिक फोकस में देखना चाहेंगे।

तो, हम प्रस्तावना पर एक नज़र डालकर शुरुआत करेंगे। प्रस्तावना नीतिवचन 1.1-7 है। और मैं सुझाव देना चाहता हूँ कि प्रस्तावना को एक शीर्षक और एक प्रोग्रामेटिक थीम द्वारा तैयार किया गया है। उसके भीतर, मुझे लगता है कि प्रस्तावना की संरचना एक चियास्म की तर्ज पर चलती है, यानी यह श्लोक तीन में इन गुणों पर केंद्रित है।

तो आइए इसे पढ़ें और समझें कि प्रस्तावना क्या कह रही है। मैं जो प्रस्तावना सुझाना चाहता हूँ वह पुस्तक के उद्देश्य को रेखांकित करना है और पुस्तक पाठक को कहां ले जाना चाहती है। दाऊद के पुत्र, इस्राएल के राजा, सुलैमान की नीतिवचन, बुद्धि और सुधार को जानने के लिए, बोधगम्य शब्दों को समझने के लिए, सुधार प्राप्त करने के लिए ताकि धार्मिकता, न्याय और ईमानदारी के कार्यों के लिए अंतर्दृष्टि प्राप्त की जा सके।

फिर हम पुस्तक के लिए एक मूल उप-उद्देश्य देखते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि, लेखक ज्ञान चाहने वाले को जो मिलेगा उससे आगे बढ़कर पुस्तक जो प्रदान करेगी, उस तक जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि अनुभवहीन को धूर्तता, जवान को ज्ञान और षडयंत्र प्रदान करना, कि जो बुद्धिमान है वह सुन कर अपनी अंतर्दृष्टि बढ़ाए और जो समझदार है वह चतुराई से सलाह प्राप्त करे।

फिर वह एक कहावत और एक व्याख्यात्मक सूक्ति, बुद्धिमानों की बातें और उनकी पहेलियों को समझने के लिए ज्ञान चाहने वाले को क्या हासिल होगा, उस पर वापस जाता है। यहोवा का भय मानना ज्ञान का आरम्भ है, परन्तु मूर्ख बुद्धि और ताड़ना को तुच्छ जानते हैं। प्रस्तावना संकेत देती है कि पुस्तक में अनुदैर्घ्य विकास हो रहा है।

मुझे लगता है कि ज्ञानपूर्ण शब्दों की श्रृंखला के साथ आगे बढ़ते हुए, प्रस्तावना हमें सूचित करती है कि पुस्तक का ज्ञान सरलता से जटिलता की ओर बढ़ता है। कहने का तात्पर्य यह है कि बुनियादी ज्ञान से जो द्विआधारी है, वह एक श्वेत-श्याम दुनिया है जहां चरित्र प्रकार दुष्ट, दुष्ट, या धर्मी और बुद्धिमान होते हैं। और यह उससे ज्ञान के अधिक परिष्कृत अध्ययन की ओर बढ़ता है जिसके लिए अधिक बौद्धिक अनुशासन और कठोरता की आवश्यकता होती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि, जैसे-जैसे ज्ञान साधक इन चरणों या चरणों के साथ आगे बढ़ता है, उसे दुनिया की एक समझ को शामिल करना होगा जो बारीकियों के अधिक रंगों और समझ के अधिक रंगों की अनुमति देता है। यह जानते हुए कि कभी-कभी राजा जैसे अच्छे दिखने वाले लोग भी गलत निर्णय ले सकते हैं और गलत काम कर सकते हैं। और इसलिए, बुद्धिमान व्यक्ति को यह भी बताना होगा कि दुनिया में कैसे व्यवहार करना है और यह भी कि दुनिया वास्तव में कैसे काम करती है।

यह संसार और ज्ञान का छायादार पक्ष है। और इसलिए, हम इसे उपयोग किए गए शब्दों से देखते हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, श्लोक दो में ज्ञान और सुधार अधिक परिष्कृत ज्ञान शब्दावली, चालाक, ज्ञान और षडयंत्र की ओर बढ़ता है।

और फिर इसके बाद जो होता है, मुझे लगता है, ऐसे शब्द जो शाही दरबार के संदर्भ को दर्शाते हैं। यही कहावत और व्याख्यात्मक उपसंहार है। ये एक ऐसा डोमेन है जो संबद्ध है, और इनकी परिणति बुद्धिमानों की बातों में होती है।

यह नीतिवचन में एक समूह है जिसका सामना हम पुस्तक के माध्यम से आगे बढ़ने पर करेंगे। वे वही हैं जिन्हें युवा ज्ञान साधक को आदर्श बनाना है और खुद को उनके अनुरूप बनाना है, उनसे सीखना है, और उनके साथ अध्ययन करना है। और इसलिए, बुद्धिमानों की बातें और उनकी पहेलियाँ।

और इस प्रकार, यह अधिक जटिलता की ओर बढ़ता है। और यह सब यहोवा के भय पर आधारित और नियंत्रित है। कहने का तात्पर्य यह है कि, यहोवा का भय उद्यम को नियंत्रित करता है और उद्यम को आधार देता है।

यह ज्ञान के अधिग्रहण को नियंत्रित करने वाला प्रारंभिक बिंदु और नियंत्रक सिद्धांत दोनों है। और इसलिए, यही कारण है कि प्रस्तावना यहोवा के भय के साथ समाप्त होती है जो ज्ञान की शुरुआत है, लेकिन मूर्ख बुद्धि और सुधार से घृणा करते हैं। इसलिए, यह पता लगाने की कोशिश करने के लिए कि क्या प्राचीन इज़राइल में स्कूल थे, पिछले कुछ वर्षों में बहुत बहस और अध्ययन हुआ है।

चाहे ऐसा मामला हो या न हो, नीतिवचन की साहित्यिक दुनिया ज्ञान साधक के घर और निकटतम परिवार में शुरू होती है। यानी, ज्ञान का उद्देश्य मुख्य रूप से चरित्र निर्माण करना है, एक अनुभवहीन युवा व्यक्ति को लेना और उन्हें अधिक बौद्धिक परिष्कार, अधिक चरित्र, निर्णय लेने में अधिक परिपक्वता की ओर ले जाना और ज्ञान के माध्यम से टोरा के मानदंडों को लागू करने में सक्षम बनाना है। इसका समापन बौद्धिक उलझनों के साथ होता है जो कि परिपक्व बुद्धिमानों के दायरे में आते हैं, सबसे अधिक संभावना शाही दरबार में होती है।

इसलिए, मैं सुझाव देना चाहता हूँ कि जैसे ही एक युवा व्यक्ति इस सामग्री में महारत हासिल कर लेगा, जैसे ही एक युवा व्यक्ति प्रस्तावना को याद कर लेगा, उसे यह समझ आ जाएगी कि पुस्तक उसे किस दिशा में ले जा रही है। कहने का तात्पर्य यह है कि पुस्तक कहाँ जा रही है? यह कैसे व्यवस्थित है? मुझे लगता है कि प्रस्तावना हमें साहित्यिक संरचना और अलंकारिक विशेषताओं का संकेत देती है। और ये स्मृति और निपुणता में सहायता के रूप में कार्य करते थे।

इसने अनुभवहीन युवाओं को इससे जुड़े खतरों और मांगों से सफलतापूर्वक निपटने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करके नागरिक और धार्मिक नेतृत्व की जटिलताओं के लिए तैयार रहने की अनुमति दी। और इसलिए, यह पुस्तक का लक्ष्य था। मैं प्रस्तावना की संरचना के बारे में थोड़ी बात करना चाहता हूँ, लेकिन इससे पहले कि हम वहाँ पहुँचें, मैं प्रस्तावना के बारे में कुछ और शब्द कहना चाहता हूँ।

मैंने देखा है कि ये छंद पुस्तक के परिचय के रूप में काम करते हैं और वे हमें प्रोग्रामेटिक विषय देते हैं। और मैं यह भी बताना चाहता हूँ कि इसे कैसे व्यवस्थित किया जाता है, इस बारे में कुछ चर्चाएं हुई हैं। कई लोग वास्तव में, श्लोक एक को शेष प्रस्तावना से जुड़ा हुआ मानते हैं।

लेकिन मुझे लगता है कि इसे समझने का बेहतर तरीका यह है कि इसे पुस्तक के स्वतंत्र परिचय के रूप में लिया जाए। कहने का तात्पर्य यह है कि यह एक शीर्षक के रूप में कार्य करता है और इसका समापन एक प्रोग्रामेटिक थीम के रूप में होता है। और इसलिए, जब हम पुस्तक के उद्देश्य को देखने के लिए उस पर काम करते हैं, तो यह वास्तव में चियास्म के मध्य पर केंद्रित होता है, यानी धार्मिकता, न्याय और ईमानदारी के कार्यों के गुणों पर।

तो, मेरा तर्क यह है कि जैसे ही युवा व्यक्ति इस सामग्री में महारत हासिल कर लेता है, वह समझ जाएगा कि धार्मिकता, न्याय और अखंडता के गुण जो टोरा के मानदंड हैं, युवा व्यक्ति के लिए आधार रेखा प्रदान करते हैं क्योंकि वह ज्ञान की सामग्री में महारत हासिल कर रहा है। उसे धार्मिकता, न्याय और सत्यनिष्ठा को विकसित करना है। ये वे गुण थे जो टोरा ने राजा के लिए निर्धारित किये थे।

व्यवस्थाविवरण में, राजा को न्याय का प्रदर्शन करना था, और इसराइल के आम लोगों के लिए चिंता की विशेषता थी। और इसलिए, ये गुण प्राचीन इज़राइल के नेताओं के लक्षण थे और उन्हें कैसे कार्य करना और जीना था। इसलिए, यदि हम इसे नीतिवचन की पुस्तक में प्रवेश द्वार के रूप में समझते हैं, तो मैं प्रस्तावना को प्रारंभिक ज्ञान के उदाहरण के रूप में देखने में कुछ मिनट बिताना चाहता हूँ।

तो, मेरा तर्क यह है कि नीतिवचन ज्ञान के सरल रूपों से अधिक जटिल रूपों की ओर बढ़ते हैं, और यह प्राथमिक ज्ञान से शुरू होता है जो चरित्र निर्माण पर केंद्रित है। और इसलिए, यह नीतिवचन 1:8 से 9:18 तक है। कई विशेषताएं बताती हैं कि यह बुनियादी और आवश्यक ज्ञान है। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रस्तावना में ज्ञान संरक्षण की शुरुआत घर से होती है।

इसकी शुरुआत प्राथमिक शिक्षा से होती है और यह चरित्र निर्माण पर केंद्रित है। और मैं आपको कुछ सुझाव देता हूँ कि ऐसा क्यों है। सबसे पहले, प्रस्तावना का पिता-पुत्र संबंध ज्ञान निर्देश के लिए पारंपरिक उत्पत्ति को ध्यान में रखते हुए घरेलू संदर्भ से जुड़ा है।

कहने का तात्पर्य यह है कि, इज़राइली पिता आम तौर पर अपने व्यवसाय को अपने बेटों को सौंप देते थे और उनके सामाजिक, नैतिक और धार्मिक प्रशिक्षण के लिए जिम्मेदार होते थे। यहां का घरेलू परिदृश्य भी स्पष्ट रूप से मां की आवाज को दर्शाता है, जो प्राचीन निकट पूर्वी ज्ञान में एक असामान्य विशेषता है, साथ ही नीतिवचन 4 में दादा की आवाज भी है। अलंकारिक रणनीति माता-पिता के निर्देश और यहोवा की इच्छा के बीच इस संबंध को रेखांकित करती है। , व्यवस्थाविवरण के प्रशिक्षण व्यवस्था को प्रतिध्वनित करते हुए, जिसके तहत माता-पिता अपने बच्चों को अगली पीढ़ी को यह निर्देश देते हैं कि यहोवा ने मूसा के माध्यम से क्या प्रकट किया। और इसलिए, इसकी शुरुआत घर से होती है।

दूसरे, प्रस्तावना पेटी को संबोधित है, यानी अनुभवहीन युवा जो स्वतंत्र वयस्कता के दायरे में अंतिम प्रवेश की दहलीज पर है। फ्रेडरिक का मानना है कि पुस्तक के मुख्य संबोधनकर्ता के रूप में इस चरित्र का महत्व यह है कि पेटी एक अनासक्त युवा का प्रतीक है, जिसे एक जोखिम भरी दुनिया में नेविगेट करके खुद की जिम्मेदारी लेनी चाहिए जिसमें बुद्धिमान और मूर्ख दोनों उसे अपने पक्ष में भर्ती करने के लिए कार्य करते हैं। . इसलिए, भोले-भाले और शायद स्वाभाविक रूप से स्वच्छंद युवा व्यक्ति को ज्ञान के कठिन रास्ते को पहचानना होगा और उस पर चलना होगा यदि उसे दोनों तरफ मौजूद प्रलोभनों, मूर्खों और बुद्धिमानों से बचना है जो उसे रास्ते से भटका देंगे।

तीसरा, प्रस्तावना लेडी विजडम के आकर्षक, संपूर्ण चरित्र पर विस्तार से प्रकाश डालती है। लेडी विजडम ज्ञान की खोज में लगे युवक के लिए एक सक्रिय संरक्षक है, और उसकी तुलना खतरनाक और आकर्षक बाहरी महिला से की जाती है। साहित्यिक पात्रों के रूप में, लेडी विजडम और बाहरी महिला दोनों को प्रस्तावना में पूरी तरह से विकसित किया गया है।

ज्ञान, चरित्र और सत्यनिष्ठा के लिए युवक की खोज की शुरुआत में, लेडी विजडम के चार भाषण हैं जिनमें 48 छंद और 325 से अधिक शब्द हैं। वह नीतिवचन के मासोरेटिक पाठ में लगभग 10% शब्दों को आवाज देती है। और लेडी विजडम पिता की सलाह को बढ़ाती है।

वह समान सुविधाजनक दृष्टिकोण से बोलती है और समान सांस्कृतिक मूल्यों की पुष्टि करती है। पुस्तक के समापन पर, गुणी आदर्श पत्नी अपनी दैनिक चिंताओं और परिश्रम में लेडी विजडम के लोकाचार का प्रतीक है। लेडी विजडम और गुणी पत्नी, लेडी फॉली और उसकी शिष्या, जो आकर्षक बाहरी महिला है, के सकारात्मक और वांछनीय समकक्ष हैं।

उत्तरार्द्ध संभवतः एक उच्च वर्ग की विवाहित इज़राइली महिला है जो युवा अभिभाषक को एक आकर्षक प्रलोभन प्रस्तुत करती है। वह उस चीज़ को व्यक्त करती है जिसे हम एक गंभीर प्रलोभन कह सकते हैं जिससे युवाओं को हर कीमत पर बचना चाहिए। वह लेडी फॉली का अवतार है।

वह अवैध और घातक सुखों का वादा करती है जो अंततः अधोलोक की ओर ले जाते हैं। चौथा कारण यह है कि प्रस्तावना चरित्र निर्माण पर केंद्रित है जिसमें प्रवचन की मनोदशा और संरचना शामिल है। इसमें 10 भाषण और पांच अंतराल हैं, और ये प्रगतिशील निर्देश के आकार और एकीकृत का एक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं ताकि अध्याय 10 से 22 तक सोलोमन वन संग्रह के अधिक जटिल ज्ञान का पालन करने के लिए तैयार किया जा सके।

मेरे पास यहां इन दो स्लाइडों पर 10 ज्ञान भाषणों के दो उदाहरण हैं, साथ ही पांच भ्रमण भी हैं। अक्सर यात्राओं में लेडी विजडम या लेडी फॉली का आह्वान या युवाओं से ज्ञान की दिशा में एक निश्चित मार्ग का अनुसरण करने की कोई अन्य अपील शामिल होती है। ये भाषण बताते हैं कि हम अपने संभावित गलती करने वाले बेटे को पिता की सलाह की अनिवार्यता कह सकते हैं।

इस प्रकार, नीतिवचन की प्रस्तावना प्राचीन निकट पूर्व की ज्ञान परंपराओं में प्रचलित पारंपरिक कहावतों और सूत्रों को प्रतिबिंबित करती है। उनका उद्देश्य हाल ही में शाही दरबार में नियुक्त

युवा शास्त्रियों और अधिकारियों को प्रशिक्षित करना है। एक और कारण है कि नीतिवचन की प्रस्तावना इस तरह से प्राथमिक ज्ञान और चरित्र निर्माण पर ध्यान केंद्रित करती है, वह धार्मिकता, न्याय और अखंडता पर इसका ध्यान है।

प्रस्तावना में, हमने पहले ही सुझाव दिया था कि इन गुणों पर ध्यान केंद्रित किया गया था, और यह ध्यान प्रस्तावना में भी जारी है। कहने का तात्पर्य यह है कि, प्रस्तावना में कई छंद हैं जो विशेष रूप से इस पर ध्यान केंद्रित करते हैं, विशेष रूप से अध्याय दो, श्लोक आठ और नौ में, साथ ही अध्याय आठ और श्लोक 20 में। गुणों, धार्मिकता, न्याय और अखंडता का यह समूह बनता है एक अनिवार्य हिस्सा, भविष्य के नेताओं के संरक्षण के लिए आवश्यक एक आवश्यक किरायेदार।

ये ऐसे गुण थे जो उनके लिए अपने जीवन में अपनाने के लिए आदर्श थे। और ये व्यवस्थाविवरण के मानदंडों को दर्शाते हैं। व्यवस्थाविवरण ने राष्ट्र को ऐसे नेताओं को रखने का निर्देश दिया जो इज़राइल की भूमि में ईश्वर के चरित्र के ठोस प्रतिबिंब के रूप में कानूनी और सामाजिक न्याय का अनुसरण करते हों।

राजाओं को विशेष रूप से उन खतरों से बचने के साधन के रूप में याहवे के प्रति पवित्र भय और टोरा के प्रति निष्ठा विकसित करनी थी जो आमतौर पर शाही शक्ति, अत्यधिक धन, पत्नियों और सैन्य प्रतिष्ठा से जुड़े होते हैं, जो संचयी रूप से अहंकार और धार्मिक धर्मत्याग का कारण बनते हैं। व्यवस्थाविवरण 17:14 से 20 तक यह हमारे लिए रूपरेखा है। तो, ये वे तरीके हैं जिनसे मुझे लगता है कि नीतिवचन की प्रस्तावना प्राथमिक ज्ञान और चरित्र निर्माण पर ध्यान केंद्रित करती है, जो युवा व्यक्ति को ज्ञान की अधिक समझ के लिए तैयारी की ओर ले जाती है।

इसके अलावा, मैंने देखा कि यह घरेलू शिक्षा 10 भाषणों और पाँच अंतरालों में संरचित है। और इन भाषणों की प्रकृति और उनकी अलंकारिक रणनीति पर कुछ अच्छा काम किया गया है। ग्लेन पेम्बर्टन ने यह सुझाव देते हुए काम किया है कि इन विभिन्न भाषणों की तीन श्रेणियां हैं।

वे ध्यान आकर्षित करने के लिए आह्वान हैं, और ये सुनने, ध्यान देने, चौकस रहने, कान झुकाने और चिल्लाने जैसे आकर्षक शब्दों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। तो, ये ध्यान देने के आह्वान हैं, युवा का ध्यान आकर्षित करने के लिए ताकि वह ज्ञान पर सही ढंग से ध्यान केंद्रित कर सके। और फिर याद रखने और पालन करने के लिए कॉल आती हैं।

याद रखने और पालन करने का आह्वान, त्याग न करना, न भूलना, खो न जाना जैसे शब्दों पर ध्यान केंद्रित करना। तो, युवक का ध्यान आकर्षित करने के लिए और फिर उसे जो सामग्री दी गई है उसे याद रखने और उसका पालन करने के लिए प्रेरित करना। और फिर अंतिम श्रेणी बाहरी महिला, परायी महिला या अजीब महिला के खिलाफ चेतावनी है।

ये प्रवचन कैचवर्ड क्रियाओं का उपयोग करते हैं जो बेटे को ज्ञान को संजोने, खुद की रक्षा करने और उस ज्ञान की रक्षा करने की सलाह देते हैं जिसे उसे आज्ञाओं का पालन करने और उचित रूप से पालन करने के लिए सौंपा गया है। और इसलिए, इन भाषणों के साथ-साथ, प्रस्तावना में लेडी विजडम की एक महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण भूमिका है। वह एक शिक्षक और ऋषि की

भूमिका में है, और कई लंबी कविताएँ उसे और युवा व्यक्ति को उसकी पुकार से परिचित कराती हैं।

वह खुद को सार्वजनिक स्थान पर रखती है। वह युवा पुरुष अनुयायियों को बुलाती है जो उसके आकर्षक गुणों को पहचानेंगे, उसकी सलाह को अपनाएंगे और अपनी आजीविका और सुरक्षा के लिए उसके मार्गदर्शन का पालन करेंगे। और इसलिए, उनका पहला प्रवचन या भाषण अध्याय एक, 20 से 33 में एक भ्रमण है।

और यहीं पर वह युवक को अपनी सलाह मानने के लिए बुलाती है। यह पिता के पहले भाषण के तुरंत बाद आता है, ध्यान आकर्षित करने का आह्वान। उनके पहले भाषण में हिंसक और लालची सहयोगियों, लापरवाह युवाओं के गिरोह से बचने की चेतावनी शामिल है जो उन्हें विनाश के रास्ते पर ले जाएंगे।

उसकी सलाह इसी के साथ चलती है जिसे हम एक उत्साही टकरावपूर्ण भाषण कह सकते हैं, जहां वह युवा व्यक्ति को यह याद रखने के लिए प्रोत्साहित करती है कि यदि वह उसकी बुद्धिमत्ता को अस्वीकार करता है, तो इसके गंभीर परिणाम होंगे, वास्तव में, जब वह उसका उपहास करेगी। वह स्वयं को अपनी ही मूर्खता की चट्टानों पर स्थापित पाता है। वह एक प्रकार से ज्ञानपूर्ण ढंग से कहेगी, मैंने तुमसे कहा था कि ऐसा ही होगा। और इसलिए, उनके भाषणों को अन्य भाषणों में बुना जाता है ताकि युवा व्यक्ति पर संचयी रूप से प्रभावशाली अलंकारिक प्रभाव पड़े क्योंकि वह इसके माध्यम से काम करता है।

और इसलिए, प्रस्तावना की संरचना जो मैं सुझाना चाहता हूं वह संचयी प्रवचनों का एक जानबूझकर व्यवस्थित सेट बताती है जिसका उद्देश्य एक युवा, अनुभवहीन ज्ञान सीखने वाले, पुस्तक के अभिभाषक, युवा अनुभवहीन व्यक्ति को ज्ञान, परिपक्वता और अखंडता की ओर ले जाना है। सीमांत वयस्कता के खतरों से निपटने में। कहने का तात्पर्य यह है कि, स्वतंत्र वयस्कता के चरण में जाने की दहलीज पर खड़ा कोई व्यक्ति जिसे कुछ निश्चित पंक्तियों के साथ प्रोत्साहित और चेतावनी देने की आवश्यकता है। यदि आपने बच्चों का पालन-पोषण किया है, तो आप जानते हैं कि वे अपनी प्रारंभिक किशोरावस्था में इस महत्वपूर्ण रणनीतिक अवधि में प्रवेश करते हैं, जब वे दुनिया का भ्रमण कर रहे होते हैं, यह समझने की कोशिश कर रहे होते हैं कि मुझे किस प्रकार के लोगों के साथ जुड़ना चाहिए। क्या करना अच्छा है? क्या करना बुरा है? मैं सुझाव देना चाहता हूं कि नीतिवचन की पुस्तक एक ऐसी दुनिया प्रस्तुत करके इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए एक पाठ्यक्रम प्रदान करती है जिसमें युवा व्यक्ति सीखना शुरू कर देता है कि उसे किस प्रकार की सलाह और सलाह का पालन करना चाहिए और किस प्रकार के व्यक्तियों के साथ जुड़ना चाहिए, किस प्रकार के जिन चीजों से बचना चाहिए।

और इसलिए, इसका उद्देश्य चरित्र निर्माण और युवा व्यक्ति को पिता और माता के ज्ञान का पालन करना है, जो अंततः यहोवा के ज्ञान और टोरा के मानदंडों पर आधारित है। प्रस्तावना भाषण इस बात की पुष्टि करते हैं कि यहोवा सच्चा और वांछनीय ज्ञान प्रदान करता है। और जब हम प्रवचन तीन की ओर बढ़ते हैं तो यह पिता की बुद्धिमान सलाह में परिलक्षित होता है।

फिर हम प्रवचन चार में समुदाय के सामान्य चक्र के लिए सदाचारी नागरिक व्यवहार को विकसित करके सामाजिक भलाई के लिए एक सकारात्मक चिंता देखते हैं। प्रवचन पाँच युवाओं को याद दिलाता है कि ज्ञान उनके स्वयं के पुरस्कार के रूप में कार्य करता है। उसे ज्ञान का पालन करना होगा और तदनुसार पुरस्कृत किया जाना चाहिए।

प्रवचन छह का सुझाव है कि बेटे को भी बेहतर भेदभाव को बढ़ावा देकर और सही रास्ता चुनकर अपनी विवेक की शक्तियों को बढ़ाना चाहिए। प्रवचन सात इससे आगे बढ़कर कहता है कि उसे उचित सोच और आत्म-नियंत्रण से युक्त एक अनुशासित जीवन शैली का पोषण करना चाहिए। ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे स्वयं को नियंत्रित करना होगा।

फिर भाषणों की बारी आती है और अंतिम तीन भाषण बाहरी महिलाओं के साथ अवैध यौन संबंध से जुड़े घातक खतरों के बारे में पिता के परिपक्व निर्देश के साथ चेतावनी देते हैं। और मुझे लगता है कि यह तथ्य बताता है कि वास्तव में अधिक परिपक्वता और अधिक कठिन विषयों की ओर एक आंदोलन है। कहने का तात्पर्य यह है कि अवैध बाहरी महिला के खिलाफ चेतावनियाँ सभी प्रवचनों में बीच-बीच में नहीं दी जाती हैं।

पिछाड़ी में आते हैं। और यह सुझाव देता है कि युवा व्यक्ति को ज्ञान की सुंदरता, पिता की सलाह का पालन करने की आवश्यकता, समुदाय की भलाई के लिए ऐसा करने की आवश्यकता, खुद को ज्ञान के मानदंडों के प्रति समर्पित करने में महारत हासिल करने के बाद, वह अंततः तैयार है उसे बाहरी महिला के खतरों के बारे में बताया जाए जो उसे अपनी ऊर्जा नापाक उद्देश्यों में लगाने के लिए प्रलोभित कर सकती है, जो अंततः उसे नष्ट कर देगी। और यह एक मोहक महिला द्वारा एक संदेहहीन मूर्ख को नष्ट करने के बारे में एक मार्मिक विवरण के साथ समाप्त होता है।

इन 10 भाषणों के दौरान, युवक बुरे दोस्तों और आसान पैसे के शुरुआती प्रलोभनों से लेकर निषिद्ध यौन साझेदारों के सांसारिक प्रलोभनों की ओर बढ़ गया है। पहले भाषण में हिंसा और लालच से बचने से लेकर अंतिम भाषण में मोहभंग और यौन फिजूलखर्ची से बचने तक उनकी बुद्धिमत्ता क्षमता परिपक्व हो गई है। और साथ ही, लेडी विजडम ने पिता की सलाह को मजबूत किया है।

उन्होंने किशोर युवाओं के लिए एक वांछनीय और सुरक्षात्मक संरक्षक के रूप में युवाओं से अपनी अपील प्रस्तुत की है। इसलिए, जैसा कि हम इस बारे में सोचते हैं, मेरा ध्यान रास्ते की उन परतों पर था जो बताती हैं कि क्या यह वास्तव में युवा व्यक्ति को आगे बढ़ा रहा है या नहीं। और मैं इस बारे में बस कुछ शब्द कहना चाहता हूँ।

मुझे लगता है कि वास्तव में, हम इसमें एक जानबूझकर देख सकते हैं कि इसे कैसे व्यवस्थित किया जाता है। प्रस्तावना के आरंभ और समापन पर, कई आकर्षक शब्द हैं जो प्रस्तावना को प्रतिध्वनित करते हैं। यह एक जानबूझकर साहित्यिक ढाँचे का सुझाव देता है जो फिर से, इस ज्ञान प्रशिक्षण व्यवस्था, इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को रेखांकित करता है।

1.8 से 19 में प्रारंभिक ज्ञान प्रवचन कई कैचवर्ड के माध्यम से प्रस्तावना से जुड़ता है, जैसे कि सुनना और सुधारना। दूसरा ज्ञान प्रवचन, जो मैं सुझाना चाहता हूँ, नीतिवचन की पुस्तक की

तरह, मैं इसे इस प्रकार समझता हूँ कि पुस्तक के परिचय में भजन 1 और 2 की परिचयात्मक भूमिका है। मुझे लगता है कि पहले दो भाषणों का यहां समान कार्य है।

और दूसरा ज्ञान प्रवचन शब्दों, ज्ञान, समझ और ज्ञान को दोहराकर प्रस्तावना के साथ इस मौखिक संबंध को बढ़ाता है। धार्मिकता, न्याय और सत्यनिष्ठा के इन विचारों के साथ प्रस्तावना में चियास्म की धुरी उस दूसरे भाषण के अंत में आती है, जहां पिता अपने ज्ञान भाषणों के फोकस को तेज करने के लिए उन शब्दों को दोहराते हैं क्योंकि वे यहोवा की बुद्धि पर आधारित हैं और इन पंक्तियों के साथ चरित्र निर्माण की ओर अग्रसर। इसी तरह, जब हम प्रस्तावना के अंत तक पहुंचते हैं, तो हमारे पास एक निष्कर्ष होता है जो इनमें से कई विषयों को प्रतिबिंबित करता है।

लेडी विजडम ने 9:10 में यहोवा के भय पर अपनी अंतिम अपील की, जो फिर से गूँजती है, नीतिवचन 1:7 की प्रारंभिक थीम कविता, यहोवा का भय ज्ञान की शुरुआत है। जैसा कि प्रस्तावना में है, जहां अनुभवहीन व्यक्ति, अनुभवहीन युवा प्राथमिक लक्ष्य है। हम उसे अध्याय 9 श्लोक 4, 6, और 16 में भी प्रकट होते हुए देखते हैं।

लेडी विजडम 9:9 में एक बुद्धिमान व्यक्ति को उसकी शिक्षा में जोड़ने के लिए निर्देश देने के गुणों की प्रशंसा करती है, जो प्रस्तावना के श्लोक 5 में ज्ञान, जोड़ने और शिक्षण की प्रस्तावना में शब्दों के इस संयोजन को प्रतिध्वनित करता है। धार्मिकता और सत्यनिष्ठा प्रदर्शित करने वाले चरित्र प्रकारों को ज्ञान और मूर्खता के महत्वपूर्ण संबोधकों के रूप में पहचाना जाता है। यह 1:3 में प्रस्तावना के मुख्य छंदों में इन चरित्र लक्षणों के उपयोग को याद दिलाता है। तो, यह सब संचयी रूप से सुझाव देता है कि प्रस्तावना को जानबूझकर उन युवाओं को प्रेरित करने के लिए व्यवस्थित किया गया है जिन्हें प्राथमिक ज्ञान में निर्देश दिया जा रहा है, धार्मिकता, अखंडता और इन गुणों पर ध्यान देने के साथ घरेलू संदर्भ की सादगी से चरित्र निर्माण में शामिल किया जा रहा है। आवेदन बढ़ाने की दिशा में न्याय करें क्योंकि वह बाहरी दुनिया को उसके सभी प्रलोभनों के साथ अनुभव करने के लिए तैयार है ताकि उसे उचित रूप से निर्देश दिया जा सके और सीखने के अगले चरण में आगे बढ़ने पर उसके साथ आने वाले खतरों और मांगों का सामना करने के लिए तैयार हो सके।

इसलिए, जैसा कि हमने प्रस्तावना की प्रगति का अनुसरण किया है, हमने देखा है कि अनुभवहीन युवाओं को धार्मिकता, न्याय और अखंडता के इन गुणों की ओर ले जाने की प्रस्तावना में ध्यान जानबूझकर बनाया और व्यवस्थित किया गया है, जो इनकी प्रगति में अंतर्निहित है। सात ज्ञान संग्रह। इसलिए, मैं सुझाव दे रहा हूँ कि सात ज्ञान संग्रहों में, ज्ञान प्रशिक्षु को चरित्र निर्माण, ज्ञान के मौलिक रूपों और अधिक जटिलता और अधिक से अधिक अनुप्रयोग की ओर ले जाया जाता है। और इसलिए, हम इसे अध्याय एक से नौ तक में देखते हैं।

जैसे ही हम कोने को अगले चरण में मोड़ते हैं, पुस्तक अपना स्वर और विषय बदल देती है। जिस प्रकार का निर्देश हमें मिलता है वह एक सूक्ति, एक द्विआधारी प्रकार की कहावत की ओर ले जाता है। और इसलिए, जैसे-जैसे हम अगले अध्याय में आगे बढ़ेंगे, हम देखेंगे कि वास्तव में, युवा व्यक्ति अब दुनिया में अपना रास्ता बनाना शुरू कर रहा है और विभिन्न प्रकार के लोगों का सामना कर रहा है।

और इसलिए, घर में उस प्राथमिक ज्ञान के आधार ने उसे अब दूसरे चरण के लिए तैयार किया है, जो कि चरित्र प्रकारों के बीच घूम रहा है जिसे वह घर के बाहर जीवन में अनुभव करना शुरू कर देता है। जैसे ही वह ऐसा करता है, हम देखेंगे कि उस दुनिया में उसका पहला प्रवेश धर्मी और बुद्धिमान बनाम मूर्ख और दुष्ट के काले और सफेद चरित्र प्रकारों को समझना है, जिसके साथ उसे खुद को जोड़ना है और जो वह है कत्ती काटना। जैसे-जैसे हम इन अध्यायों में आगे बढ़ते हैं, हम उन विषयों की बढ़ती प्रगति देखेंगे जो बढ़ती परिपक्वता का सुझाव देते हैं और इस बात पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं कि कैसे वह युवा व्यक्ति उस तरह के नेता के रूप में विकसित हो सकता है जो टोरा का प्रतीक है और अपने नागरिक जीवन में इसके चरित्र गुणों को जीता है। .

यह हैं डॉ. काइल डनहम, नीतिवचन में संरचना और धर्मशास्त्र पर अपने शिक्षण में, सत्र एक, चरित्र निर्माण के रूप में प्राथमिक बुद्धि।